ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-4* Issue-11* December- 2019
Innovation The Research Concept

आचार्य ब्रजेश के काव्य में सांस्कृतिक मूल्य

सारांश

आचार्य ब्रजेश एक दरबारी कवि थे। रीवा तथा ओरछा सहित अनेक राजदरबारों में उन्हें आश्रय तथा सम्मान प्राप्त था। उन्होंने अपने काव्य की रचना राज्याश्रय में ही की थी।

उनका काव्य रीतिकालीन काव्य परम्परा से प्रभावित था। उनके काव्य में रीतिकालीन संस्कृति का भी वर्णन मिलता है। राजा–रानी ही अधिकतर उनके काव्य के विषय होते थे। श्रृंगार वर्णन में उन्होंने राधा एवं कृष्ण को भी आलम्बन बनाया है।

कमलेश कुमारी रवि
एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कला संकाय,
डी.ई.आई., दयालबाग,
आगरा, भारत

उनके वंश परिचय के सम्बन्ध में ब्रजेश जी द्वारा उल्लिखित पंक्तियां उद्‌घृत हैं–

''महापात्र विश्वनाथ तैसे नरहरि नाथ,
भये हरिनाथ कवि मण्डल में रवि हैं
वंशज हैं जिनके ब्रजेश भाषाचार्य,
काव्याचार्य कोविद–महीपन में छवि है,
जाने अलंकार गूढ़ तत्व ध्वनि–भाव भेद,
छन्द रचना में दास–देव तें न दवि हैं।
महाराज रीवा के पुराने कवि राज हम
ओरछाधिराज की सभा में राजकवि है।''[1]

इस प्रकार युगीन राज वैभव की विलासिता एवं परम्पराएँ ही उनके काव्य में वर्णित हुई हैं, जो तत्कालीन संस्कृति को एवं राजघराने की संस्कृति को उजागर करती है–

''आनन्द सहित द्विज वृंद उच्चरत वेद अमंद,
कोवित पढ़त जस चारू, संगीत कार अपारू।।
बाजत सुवीन मृदंग, नाचे नहीं नवरंग।
सबहीं करत आनंद, यहि भाँति भूप अमंद।।[2]

विलास भवन का एक और चित्र जिसमें राजमहल के विलासी संस्कृति की झाँकी प्रस्तुत की गई है–

''अंबर जरीन के परीन के पहिरि अंग,
भूषण मणीन के कगीन के सुधारती।
कहत ब्रजेश चित्र सारिका सुबंधित के,
सरिका समेत शुक सामुहे ते टारती।
पंखा पौन पान परिचारिकान प्रेरित के,
प्राणपति हेतु प्रभा पूरण पसारती।
सांझ ही तै सुमन संयोगी के, सरोज नैनी,
सेज पै सरोजन के सुमन संवारती।।[3]

विवाह के समय कन्या पक्ष वाले वर पक्ष को दहेज देते हैं यह संस्कृति कब से भारत में प्रचलित रही हैं? इसका प्रमाण तो नहीं है किन्तु परम्परा का सांस्कृतिक ढंग से निर्वाह कवि ब्रजेश अपने काव्य में करते हैं–

''दाइज दियो सउमंग साह, मतंग अंग सजाय।
बाजी अनेकन दिए राजा रसन की छवि छाय।।
को गनै भूषण बसन धन अरू धेनु पीनस कार।
दीन्हे अनेकन दास अरु दासी सुछवि आगार।।''

त्यौहार हमारी संस्कृति के प्रमुख अंग हैं, अतः अनेक कवियों ने लोक पर्वों एवं त्यौहारों को मनाने का चित्रण किया है। ब्रजेश जी ने त्यौहारों का वर्णन रीतिकालीन शैली में किया है। यहाँ पर होली खेलने का एक दृश्य प्रस्तुत किया जा रहा है–

''झोली में गुलाल लाल, झोली में अबीर भरे,
भोली भाभिनी के ब्याज चहुथा चलावती,
कहत ब्रजेश लिए टोली पगुहारन की,
बोली में मधुर काग ईशुरी की गावती।
चन्दन वलितधोली केशरिकी कोच करि,
वंदन वलित रोली मुख में लगावती।
जाने कौन मोहिनी अमोली वीर तेरे द्वार,
होली खेलिखे को होली फिरि फिरि आवती।।''[4]

इस प्रकार ब्रजेश जी ने राजदरबारों में रहकर राजमहलों की संस्कृति का चित्रण ललित शैली में किया है। राजकवियों को राजमहल से बाहर की व्यवस्था को देखने का अवसर नहीं रहता था और जो कुछ वे समाज में देखते थे उसका चित्रण कर पाना उनके लिए सम्भव भी इसलिए नहीं होता था क्योंकि राजाओं के यहाँ से वृत्ति एवं गांव मिले हुए थे। अतः ब्रजेश के काव्य में भी मात्र राजदरबारी संस्कृति का ही निरूपण पाया जाता है।

राष्ट्रीय भावनाः

राष्ट्रीय भावना ब्रजेश के काव्य में उनके 'गांधी चरित्र माला' में सबसे अधिक देखने को मिलती है। इसके अलावा विश्वनाथ शरण भूषण' तथा अन्य स्फुट छन्दों में भी पाई जाती है। रीतिकाल से प्रभावित होने के कारण उनके काव्य में राष्ट्रीयता, राजघरानों के समर वर्णन, 'गजवर्णन', शौर्य वर्णन', आतंक वर्णन', 'सेना वर्णन' आदि के रूप में ही राष्ट्रीयता का उन्मेष पाया जाता है, किन्तु गांधी चरित्र माला में ब्रजेश जी ने विशुद्ध राष्ट्रीय भावना का वर्णन किया है। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय कांग्रेसी नेताओं के साथ महात्मा गांधी देश की आजादी हेतु बिना शस्त्र की सेना तैयारी में किस प्रकार लगे हैं। इसका चित्रण ब्रजेश जी ने इस प्रकार किया है–

''भरत के प्रानिन को आरत विचारि महा,
अंगन ते आगि के अंगारे झरने लगे।
व्याकुल हैं बापू लै सहायक अनेक साथ,
लोगन में भाषन को जोस भरने लगे।
हिन्दू औ, मुसलमान एक मत के,
बलिदान हेतु प्रान प्रन जी में धरने लगे।
कांग्रेसी नेता युद्ध हेतु सस्त्र धारिन सों,
सेना बिन सस्त्र की तैयारी करने लगे।'[5]

गाँधी जी जहाँ–जहाँ स्वराज्य का शंख फूंकते हैं, वहाँ–वहाँ लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं तथा सारे बन्धनों को तोड़कर देश की आजादी के लिए उमड़ पड़ते हैं। अंग्रेजी सरकार ने दमन की नीति चलाई किन्तु उसका परिणाम उल्टा हुआ। महिलाएँ भी राष्ट्रीय आन्दोलन में उतर आईं। अंग्रेजी सरकार की जेलें भर गयी किन्तु लोगों का उत्साह दिन दूना रात चौगुना बढ़ता गया। ब्रजेश द्वारा रचित एक छन्द देखिये–

''पंजाब की नारी नरनि सों जेल सारी भरि गई
बनिता हजारन सहित बारन बिन अहारन परि गई।।
पंजाब को सुनि घोर अत्याचार हत्या करन में।
इकावारगी भभकी भयानक आगि भारत नरन में।।
क्रोधानल सों जरत जन, करत अनेक विचार।
सब विधि सों लाचार हैं, चलत न कछु उपचार।।'[6]

अंग्रेजों के अत्याचार एवं दमन नीति को देखकर भारतीय नारियाँ चुप न रह सकीं। वे भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़ी। इस आशय का एक चित्रण ब्रजेश जी के काव्य में देखने को मिलता है–

''अत्याचार अनाचार देखि अंगरेजन को,
भारत की आज वीर बनिता सम्हारतीं।
युद्ध उत्साह अस्त्र तापर सवार है के,
साहस की कठिन कृपान पानि धरती।
कहत ब्रजेश सत्याग्रह को कमर कसि,
कहा कूर गोरे कालहू को नहीं डरती।
एकै वीर लक्षिमी प्रगट भई झांसी मांहि
आज वीर लक्षिमी हजारों देखि परती।।'[7]

इस प्रकार राष्ट्रीय भाव से भरे स्वतन्त्रता आन्दोलन के अनेक चित्रण गांधी माला में मिलते हैं, इतना ही नहीं ब्रजेश के उक्त काव्य में स्वतन्त्र भारत का भी चित्रण किया है कि किस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होकर अंग्रेजों ने भारत की सत्ता भारतीयों के हाथ सौंप दी। जैसे–

लाल गर्वनर आदि पठायो निमंत्रण आदर के युत न्यारे।
गाँधी जवाहर लाल पटेल प्रसन्नता सों देहली पग धारे।।
बन्दन के अभिनन्दन हिंद को लन्दन आप सबन्धु सिधारे।[8]

आजादी प्राप्त करने के बाद भारत माता की उन्नति के लिए कवि का मन लालायित है, देश के प्रति उनका दृष्टिकोण प्रगतिवादी है, उसका प्रमाण निम्न उदाहरण से स्पष्ट है–

दुश्मनों से पाया देश जारे से जमाय पग,
सपूत में अंगद से कम न कढ़ैगे हम।

तोड़ेगे पहाड़ वन वसुंधरा को,
ओड़ेगे नदी नद उमाह में मढ़ेंगे हम।
करके प्रयत्न लाखों करेंगे प्रजा को सुखी,
एकता के मंत्र देश–देश में पवेंगे हम।
भारत को उन्नत बनाने में बढ़ेंगे आगे,
आज भी बड़े हैं और कल भी बढ़ेंगे हम।[9]

प्रस्तुत छन्द में राष्ट्रीय भावना के साथ कवि भाव एवं भाषा दोनों दृष्टि से प्रगतिवादी दिखाई देते हैं। ब्रजेश के काव्य में दो तरह की राष्ट्रीय भावना के दर्शन होते हैं, प्रथम वह राष्ट्रीय भाव है जो तत्कालीन वातावरण में व्याप्त था, वह है तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन, जिसका वर्णन उनके द्वारा रचित ग्रन्थ 'गाँधी चरित माला' में है। दूसरी प्रकार की राष्ट्री भावना उनके राज्याश्रय संबंधी काव्यों में मिलती है, जिसके अन्तर्गत उन्होंने संबंधित राजाओं के देशप्रेम एवं युद्धादि का वर्णन किया हैं कुल मिलाकर ब्रजेश के काव्य में राष्ट्रीय भाव पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

सामाजिक भावनाः– सामाजिक स्थितियों का चित्रण करना ब्रजेश का उद्देश्य नहीं था, उन्होंने तो श्रृंगार वर्णन तथा लक्ष्ण ग्रंथों का निरूपण किया था, साथ ही राज्याश्रय में रहकर राजाओं का यशोगान किया। उसी के बीच उस युग की सामाजिक भावनाओं का कुछ निरूपण पाया जाता है। यथा–

राज्यश्री वर्णन – ब्रजेश ने अपने काव्य में अनेक राजदरबारों के राजयश्री का वर्णन किया हे। राज्य वैभव के अन्तर्गत सर्वप्रथम स्थान राजा का होता है, उसके बाद रानी, राजमहल, वाटिका, सेना, सेनापति, कृपाण, युद्ध तथा दान वर्णन आदि आते हैं।

वह ऋतुराज यह मेदनी को महाराज,
वह बिन गेह याके महल निकेत है।
कहत ब्रजेश जड़ वृक्षन विकासै वह,
यह प्रजागन के प्रफुल्लता को हेत है,
वाके एक कोकिल कलामत अनेक पाके,
कौन भांति कीजिए समानता को नेत है।
ओरक्षा के पति सदा राखै व सुधा की पति,
विश्व को बसंत बिना पति कर देत है।[10]

प्रस्तुत छन्द में कवि ने ओरक्षा नरेश महाराज वीर सिंह जू देव को ऋतु पति बसंत से श्रेष्ठ वर्णित किया है तथा ऋतुपति से ओरक्षा पति की श्रेष्ठता सिद्ध की है।

राजदरबार में मन्त्रियों, विद्वानों तथा कवियों को सम्मान मिलता था, इसका भी वर्णन ब्रजेश के काव्य में देखा जाता है।

ओरक्षा नरेश की सभा का एक दृश्य ब्रजेश के काव्य में दृष्टव्य हैं, जहाँ अनेक मन्त्रियों का जमघट है और राजा प्रजा पालक है–

मंत्र गूढ़ जिनके महामंत्री मौलि अनेक।
विक्रम विधा बुद्धि में अधिक तक तै एक।।
प्राति सहित पालत प्रजन राज नीति के गेह।
ऐसे मंत्री मम विद धारे धर्म सनेह।।
पण्डित षट शास्त्रीपरम पौराणिक मतिभान।
राजसभा में राज ही ओरहु घने सुजान।।
राजसभा में पांच कविराज रहत हमेश।
बिहारी, मधु, अंबिका, रामाधीन, ब्रजेश।।[11]

प्रस्तुत पद्य में राजा–प्रजा का संबंध तथा राज्य व्यवस्था का चित्रण कर तत्कालीन राजतन्त्रीय सामाजिक व्यवस्था का चित्रण किया गया है। राज समाज के अतिरिक्त ब्रजेश ने समाज के अन्य वर्गों का चित्रण नहीं किया है। इसका कारण ब्रजेश की अनभिज्ञता नहीं है क्योंकि यह तत्कालीन समाज का ही दोष कहा जा सकता है, जो राजदरबार तक ही सीमित था।

राजनीतिक चेतना

ब्रजेश के काव्य में राजनीतिक चेतना उनके ग्रंथ 'मोहन चरित माला' में सर्वाधिक देखी जाती है। इसके साथ ही उनके राज्यश्री वर्णन में भी राजनीतिक चेतना पाई है। ब्रजेश ने अपने जीवन में दो प्रकार के राजनैतिक युग देंखे हैं– प्रथम राजतन्त्रीय युग जहाँ राज्याश्रय में रहकर ब्रजेश जी राजाओं की वीरता, सुकुमारता, राजवैभव एवं उनके युद्ध कौशल आदि का वर्णन किया है। दूसरा युग वह है जहाँ देश की जनता अंग्रेजों की गुलामी में घुटन महसूस करती हुई देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा रही थी, ब्रजेश जी ने 'गाँधी चरित माला' में राष्ट्रीय आन्दोलन के चित्र खींचे हैं। दोनों प्रकार की राजनीतिक चेतनाओं के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं–

यद्यपि करत अफ्रीका में निवास गांधी
नित्यप्रति हिन्दी भक्ति तद्यपि अनंत होय।
कहत ब्रजेश कौन कीजे उपचार जासो,
विमल विचार या हमारो बलवंत होय।।[12]

स्वदेशी आन्दोलन में लोगों ने विदेशी वस्तुओं का सभी प्रकार से बहिष्कार कर दिया। विदेशों में बने कपड़ों के थान के थान जला दिए गए। इन्होंने अंग्रेज शासन का हुक्म मानना बन्द कर दिया तथा मार खाकर भी पीछे नहीं हटे।

''लाय दुकान ते फूँके बजाज,
नए फट थान जे कीमत देशी।
अंगन में पहिरै लगे खद्दर,
चद्दर काति के सूत स्वदेशी।
मानत न अनुशासन साह को,
युद्ध उमाह भरे जन देशी।
मरहु ते मुख मोरत हैं नहीं,
तोरत–फोरत माल विदेशी।।''[13]

इस प्रकार सम्पूर्ण देश में राजनीतिक चेतना जाग्रत हो उठी, लाखों प्रकार से दमन करने पर भी यह आग बुझने वाली नहीं थी।

राजा वर्णन– ओरछा नरेश महाराज वीर सिंह जू देव का वर्णन कवि ने निम्नलिखित प्रकार से किया है–

वाके एक कौकिल कलामत अनेक याके,
कौन भांति कीजिए समानता को नेत है।
ओरछा के पति सदा राखें वसुधा की पति,
विश्व को बसंत बिना बिन पति कर देत हैं।''[14]

रानी वर्णन– बांधव नरेश (रीवा) की महारानी दीनों के दुख दूर करने वाली तथा विमलकांति वाली हैं–

ऊँचे–ऊँचे मंदिर में करती निवास सदा,
हरती कलेश दास दीनन के सारे हैं।
कहत ब्रजेश दक्ष कच्छ राज नन्दिनी हैं,
विश्व वन्दिनी हैं सिंह पौरि में निहारे हैं।''[15]

सेनापति वर्णन

सेनानी सम सस्त्र विद सेनापति शूर।
जंग परे विक्रम कुरै दुरै न लखि भट भूर।।''[16]

समर प्रयाण वर्णन– महाराज विश्वनाथ सिंह जब समर प्रयाण करते हैं तो भूमि की कौन कहे, सातो समुद्र तक काँप उठते हैं–

भूप विश्वनाथ कसि कम्मर जब,
सम्मर के हेत भट संगलै निकलि हैं।
कंदर समानगिरि ददर परैंगे महा,
मंदर लो महल परंदर के हलि हैं।।[17]

कवि का यह छन्द कवि भूषण के छन्द से प्रभावित है।

प्रभाव एवं प्रताप वर्णन– कविवर ब्रजेश के आश्रयदाता महाराज विश्वनाथ सिंह का प्रभाव एवं प्रताप इतना अधिक है कि शत्रु दल में खलबली मची रहती है–

साजत निसान सैन सेर सम गाजत ही,
भाजत भमरि वैरी भूमृत न खाढ़े मैं।
कहत ब्रजेश धाक हाक सुनि धोंसन की,
होत आक वाक खलवंद मद वाढ़े मैं।।
ज्वाल की ज्वलित विकराल काल कैसी,
म्हाकाल कूट कलित कराल तेग काढ़े मैं।
तो पै कहूँ भानु वंस भूपति प्रकोपै तब
कौन राजपूत पग रोपै रन गाढ़े में।।[18]

इस प्रकार ब्रजेश के साहित्य में राजनीतिक चित्रण न तो अति विस्तृत है और न ही अति सूक्ष्म। यद्यपि राजवैभव के वर्णन का मुख्य उद्देश्य अपने आश्रयदाता को प्रसन्न करना होता था फिर भी आचार्य ब्रजेश ने इसमें पर्याप्त सरसता उत्पन्न की है।

इस वर्णन में कवि ने अतिश्योक्ति का पूरा–पूरा सहारा लिया है किन्तु उसमें छिछलापन कहीं नहीं आने दिया है। ब्रजेश द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय आन्दोलन के चित्र अवश्य प्रमाणिक हैं तथा तत्कालीन राजनीति एवं नव भावना के परिचायक हैं।

दार्शनिक भावना– आचार्य ब्रजेश रसवादी आचार्य हैं, जीवन भर श्रृंगार लिखने के बावजूद भी उन्हें संसार की निःसारता का ज्ञान था, उनका भौतिक जीवन ऐश्वर्ययुक्त था, खान–पान, रहन–सहन, वेष–भूषा सभी जगह उनमें राजसी ठाट–बाट दिखाई देता है। फिर भी ब्रजेश ने संसार की निःसारता का आभास किया था, उन्हें ईश्वरी सत्ता का भी आभास था, उन्हें मालूम था कि यह सब कुछ स्थाई नहीं है।

वाहन वाजि के वृन्द ब्रजेश, गयंद खरे के खरे रहि जाएगें।
भोजन भाजन भूषण मौन भंडार भरे के भरे रहि जाएंगे।।
पीनस पालकी पालने पाल पलंग परे के परे रहि जाएंगे।
अन्त समय कफ बात से ग्रसित बैन गरे के गरे रहि जाएंगे।।[19]

बहुत सीधे–सीधे शब्दों में ब्रजेश ने संसार की निस्सारता को व्यक्त किया है कि वह शरीर क्षण भंगुर है तथा क्षण भंगुर संसार में कोई किसी का साथ देने वाला नहीं है और तो और अन्तिम समय में अपनी ही वाणी अपने गले से बाहर नहीं निकलती। अतः मिथ्या संसार में मनुष्य को कभी गर्व नहीं करना चाहिए।

निष्कर्षतः ब्रजेश के साहित्य की सांस्कृतिक भावभूमि युगानुरूप है। रीतिकालीन दरबारी संस्कृति और परम्परा का चित्रांकन अधिक मात्रा में हुआ है। ब्रजेश के काव्य में जनवादी चेतना गांधीयुग में भी मिलती है। वस्तुतः ब्रजेश प्रथम स्तर पर राज्यश्री कवि हैं और द्वितीय स्तर पर जनतन्त्रीय चेतना के संवाहक स्वराज्य और स्वतन्त्रता के चारण हैं, दरबारी रीति की पुरातनता से लेकर ब्रिटिश सत्ता की हुकूमत तक कार्य देखने वाला कवि युगानुरूप अपनी लेखनी से गति, विचार एवं अभिव्यक्ति प्रदान करता है। उसकी कविता जितनी ही अधिक दरबारी संस्कृति की उपज है, उतनी ही युगीन चेतना की प्रतिफलन भी है।

संदर्भ सूची

1. आचार्य ब्रजेश– ब्रजेशवंश परिचय–हस्तलिखित ग्रन्थ, पृष्ठ सं0 –97
2. आचार्य ब्रजेश– विवाह महोत्सव–प्रकाशन महाराज श्री प्रकाश सिंह, 1925,पृ0सं0–6
3. आचार्य ब्रजेश – श्रृंगार शिरोमणि– अप्रकाशित, पृ0सं0–248
4. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–33
5. आचार्य ब्रजेश – गाँधी चरित्र माला– तारा प्रकाशन मन्दिर, सन् 1969, लखनऊ, पृ0सं0–14

6. आचार्य ब्रजेश – गाँधी चरित्र माला– तारा प्रकाशन मन्दिर, सन् 1969, लखनऊ, पृ0सं0–14
7. आचार्य ब्रजेश – गाँधी चरित्र माला– तारा प्रकाशन मन्दिर, सन् 1969, लखनऊ, पृ0सं0–20
8. आचार्य ब्रजेश – गाँधी चरित्र माला– तारा प्रकाशन मन्दिर, सन् 1969, लखनऊ, पृ0सं0–23
9. आचार्य ब्रजेश – स्फूट रचनाएँ–हस्तलिखित
10. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–51
11. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–28
12. आचार्य ब्रजेश – गाँधी चरित्र माला– तारा प्रकाशन मन्दिर, सन् 1969, लखनऊ, पृ0सं0–10
13. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–380
14. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–380
15. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–380
16. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–385
17. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–386
18. आचार्य ब्रजेश – रस रसांग निर्णय–हस्तलिखित, पृ0सं0–280
19. आचार्य ब्रजेश – ब्रजेश वंश परिचय–हस्तलिखित ग्रन्थ पृ0सं0–204